Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

समकालीन काव्य में प्रजातांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति

डॉ. लालचंद सिन्हा

सहायक प्राध्यापक(हिन्दी)
शासकीय नवीन महाविद्यालय ठेलकहाडीह
जिला– राजनांदगांव (छ.ग.)

''अंधकार है वहॉ जहॉ आदित्य नहीं है। मुर्दा है वह देश जहॉ साहित्य नहीं है।'' कहकर किसी कवि ने साहित्य की महिमा और महत्ता का सुंदर प्रतिपादन किया है। किसी भी देष की सभ्यता ,संस्कृति तथा मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना के स्तर का आकलन करना है तो उस देष में सृजित साहित्य का अवलोकन आवष्यक है। इसीलिए पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने साहित्य को 'समाज का दर्पण ' कहा है। व्यक्ति और समाज के जीवन में समय–समय पर जो घटता है उसी की कलापरक अभिव्यक्ति को साहित्य की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। सजृन चाहे कला का हो या साहित्य का, उसमें बेहतर समाज की कल्पनात्मक अवधारणाएँ तो होती है। सामाजिक सत्य के विकासगामी तत्त्वों के भीतर सृजनात्मक कल्पना का जन्म होना होता है। साहित्य और समाज का गहरा संबंध है। इसीलिए पाष्चात्य साहित्यकार **मैथ्यू अर्नाल्ड** ने साहित्य को जीवन की आलोचना कहा है। इस संबध में **मुक्तिबोध** का विचार है कि '' साहित्य का अध्ययन एक प्रकार से मानव सत्ता का अध्ययन है। अतएव जो लोग ऊपरी तौर पर साहित्य का ऐतिहासिक विहंगावलोकन अथवा समाजशास्त्रीय निरीक्षण कर चुकने में ही अपनी इति कर्तव्यता समझते हैं,वे भी एकपक्षीय अतिरेक करते हैं।''1

प्रत्येक काल का साहित्य अपने युग–परिवेश से अनुस्युत रहता है। कारण चेतना के तत्त्व बदलते ही उसकी अभिव्यक्ति का स्वरूप भी बदल जाता है। क्योंकि स्वयं चेतना मानवीय संबंधों में परिवर्तन उपस्थित होते ही बदल जाता है। अतः प्रत्येक कालावधि में प्रणीत साहित्य में तद्युगीन समाज का दर्षन होता है।

' सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्' की महान भावना में भारतीय जीवन–दर्षन ने अभिव्यक्ति पायी है। यही तत्त्व इसकी सांस्कृतिक गौरव का उत्स है। इसी कारण इसकी सभ्यता सदैव सजीव रही है। ''सांई के सब जीव है कीरी कुंजर दोय'' और ''ईश्वर अंष जीव अविनासी'' कहकर कबीर और तुलसीदास प्रभृति संत महात्माओं ने समस्त जीवों में समत्व भाव का प्रतिष्ठापन किया है। यही समत्व भाव आधुनिक भारतीय जीवन में लोकतांत्रिक मूल्यों के रूप में साकार हो उठा है। राजनीतिक दृष्टि से भारतवर्ष आज विश्वपटल पर सबसे वृहद लोकतांत्रिक देश है।

प्रजातंत्र अंग्रेजी शब्द **'डेमोक्रेसी'** का हिन्दी अनुवाद है। 'डेमोक्रेसी' शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'डेमोस' तथा 'क्रेटोस' से मिलकर बना है। जिसका क्रमशः अर्थ जनता तथा षक्ति है। प्रजातंत्र, लोकतंत्र अथवा जनतंत्र का अर्थ जनता का षासन है जिसमें षासन षक्ति एक विषेष वर्ग या वर्गों में निहित न रहकर समाज के सदस्यों में निहित होती है।

हिन्दी साहित्य में लोकतांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति नितांत रूप से नवीन नहीं है।संदर्भ विषेष में काव्य साहित्य पर दृष्टिपात करें तो अंतश्चेतना के स्तर पर इसकी व्यापक अभिव्यंजना हुई है। संत शिरोमणि एवं लोकनायक **गोस्वामी तुलसीदास जी** का 'श्रीरामचरित मानस' समग्रतः लोकतांत्रिक मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति है। जहॉ वे सच्चे प्रजापालक राजा का स्वरूप षारीरिक अवयव रूपी प्रजा का समभाव से पालने–पोषने वाला मुख के समान स्थापित करते हुए मानस में – **''मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक। पालइ पोषइ सकल अंग,तुलसी**

सहित विवेक।।"2 लिखते हैं वहीं प्रजा को कष्ट पहुँचाने वाले राजा को भयंकर परिणामों के प्रति चेतावनी यह कहकर भी दी है– **" जासू राज प्रिय प्रजा दुखारी,सो नृप अवसि नरक अधिकारी।।"** उनके द्वारा परिकल्पित रामराज्य ऐसे लोकचारित्र्य से युक्त है जहॉ सभी मानव को जीवन और जगत पर समान रूप से अधिकार है। जहॉ **"दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि व्यापा।"।**

इस धरा पर श्रीरामजी के अवतरण के मूल में सज्जनों की पीड़ा हरना और जनतंत्र की स्थापना करना रहा है। इसलिए उनके जीवन की अभिव्यक्ति लोकरक्षक तथा लोकतंत्र प्रतिस्थापक रूप के बिना नहीं हो सकती। राष्ट्रकवि **मैथिलीशरण गुप्त जी** ने साकेत में जन–मन को ईश्वरत्व प्रदान करना और लोकतंत्र को महिमा मंडित करना अपने अवतरण का हेतु प्रकट करते हुए स्वयं राम से यह कहलवाया है कि – **"भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया/नर को ईष्वरता प्राप्त कराने आया/ संदेश यहॉ मैं नहीं स्वर्ग का लाया/इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।।"3**

आज का मानव समाज अनेक विसंगतियों,अंतरविरोधों, मान्यताओं और सिद्धांतों से जकड़ा हुआ है। फलतः मानवीय जीवन जटिल और संघर्षमय हो गया है। इसके मूल कारण में समत्व का अभाव है। संघर्ष के कारण और समाधान के विषय में गंभीर चिंतन करते हुए राष्ट्रीय विचारधारा के महान कवि **श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'जी** लिखते हैं –

" जब तक मनुज मनुज का सुख भाग नहीं सम होगा/षमित न होगा कोलाहल , संघर्ष नहीं कम होगा।।"4

विषमता की पीड़ा से सकल विष्व स्पंदित है और समरसता की प्रतिस्थापन हेतु संघर्षरत है। इस भाव की अभिव्यक्ति कामायनीकार **प्रसाद जी** ने इस प्रकार किया है –

" विषमता की पीड़ा से व्यस्त, हो रहा स्पंदित विष्व महान/ नित्य समरसता का अधिकार ,उमड़ता कारण जलधि समान/व्यथा से नीली लहरों बीच, बिखरते सुखमणि द्युतिमान।।"5

महाप्राण निराला जी की प्रगतिवादी चेतना परक समग्र रचनाएँ समाज में व्याप्त विसंगतियों एवं जड़ता के विरूद्ध क्रांति का उद्घोष हैं। भोली जनता को गुमराह कर स्वार्थलोलुप षासक अपनी सुरक्षा के सारे उपाय बड़ी चालाकी से कर रखा है। उनकी प्रसिद्ध कविता ' राजे ने अपनी रखवाली की' में स्वार्थी षासकों की चालाकी का पर्दाफाश किया गया है –

"राजे ने अपनी रखवाली की/ किला बनाकर रहा/बड़ी बडी फौजें रखी/ चापलूस कितने सामंत आये/मतलब की लकड़ी पकड़े हुए।.....जनता पर जादू चला राजे के समाज का/लोक नारियॉ के लिए रानियॉ आदर्ष हुई/.....लोहा बजा धर्म पर सभ्यता के नाम पर/ खून की नदी की नदी बही/ऑख कान मूँदकर जनता ने डुबकियॉ ली /ऑख खुली, राजे ने अपनी रखवाली की।" 6

मनुष्य सारे मूल्यों का स्रोत और उपादान है और साथ ही स्वयं उनके विघटन का कारक भी है। जो मानवीय मूल्य सहस्त्रों वर्षों पूर्व निर्मित और विकसिक हुए थे वे अब सर्वतः विघटित होते जा रहे हैं। मानव जीवन में बढ़ते मूल्यहीनता ने मानवीय संबंधों और प्रतिमानों को अस्थिर कर दिया है। समकालीन काव्य में सामाजिक–राजनैतिक स्थितियों का यथार्थवादी चित्रण किया गया है। समकालीन कविता के अग्रदूत **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी** ने अपनी कविताओं में समकालीन युगबोध का धरातलीय चित्रण किया है। 'नंदा देवी' कविता में भ्रष्ट शासन तंत्र पर कटाक्ष करते हुए स्वार्थपरता का यथार्थ चित्रण किया है –

" वहॉ दूर शहर में , बड़ी भारी सरकार है, /कल की योजना का फैला कारोबार है/ और यहॉ इस पर्वती गॉव में ,छोटी से छोटी चीज की भी दरकार है/आज की भूख और बेबसी की , बेमुरव्वत मार है।"

समकालीन कविता के सषक्त हस्ताक्षर के रूप में **मुक्तिबोध जी** का नाम समादरणीय है। वे एक सचेत, सतर्क और सोद्देश्य कवि हैं। सामाजिक यथार्थबोध के चित्रांकन में वे कबीर और निराला जी का साहित्यिक वंषधर है। वे सच्चे जनवादी कवि हैं। उनके द्वारा प्रणीत **''चॉद का मुॅह टेढ़ा है''**काव्य संग्रह में संग्रहित ''अंधेरे में'' कविता को कवियों के कवि षमषेर बहादुर सिंह ने देश के जन इतिहास का, स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात् का एक दहकता इस्पाती दस्तावेज कहा है। मुक्तिबोध जी ने आदर्ष और सिद्धांतवादिता का चोला पहन रखने वाले सत्ता लोलुप और स्वार्थ में अंधे राजनेताओं पर कटु व्यंग्य किए हैं – **'' ओ मेरे आदर्शवादी मन/ओ मेरे सिद्धांतवादी मन /अब तक क्या किया? जीवन क्या जिया/उदरम्भरि बन अनात्म बन गये/ भूतों की षादी में कनात से तन गये/ किसी व्यभिचारी के बन गये बिस्तर/.....विवेक बघार डाला ,स्वार्थो के तेल में / आदर्श खा गये/ज्यादा लिया,और दिया बहुत बहुत कम/मर गया देश,अरे, जीवित रह गये तुम।।'' 7**

जनचेतना को पाठकों तक सहज और सरल षब्दों संप्रेषित करने वाले प्रख्यात गांधीवादी कवि **पं. भवानी प्रसाद मिश्र** ने व्यक्ति, समाज और देष का आकलन भाावात्मक स्तर पर किया है। स्वतंत्रता पष्चात् देष में राजनीति का स्तर गिरता चला गया। मानवीय एवं जनतांत्रिक मूल्यों पर स्वार्थपरता किस स्तर तक हावी हो सकता है इसका विवरण मिश्र जी ने अपने 'गीतफरोष'नामक कविता में यथार्थपूर्ण दिया है। – **'' जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको/पर पीछे पीछे अक्ल जगी मुझको/जी लोगों ने तो बेच दिये ईमान/.आप न हो सुनकर ज्यादा हैरान/मैं सोच समझकर आखिर गीत बेचता हूॅ।'' 8**

समकालीन काव्यधारा के जन कवि **बाबा नागार्जुन** संघर्षषील जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। उन्होंने अपने देष की जनता की दषा को लेकर गहरी चिंता,राजनैतिक उपेक्षा तथा बेहतर जीवन के लिए संघर्ष को अपनी कविता में उभारा है। उन्होंने प्रजातंत्र का होम करने वाले स्वार्थी और पदलोलुप नेताओं पर सीधा प्रहार किया है – **'' सामन्तों ने कर दिया प्रजातंत्र का होम/लाष बेचने लग गये खादी पहने डोम/खादी पहने डोम लग गये लाष बेचने/माइक गरजे,लगे जादुई ताष बेचने/इन्द्रजाल की छतरी ओढे श्रीमन्तों ने, प्रजातंत्र को होम कर दिया सामन्तों ने।।9**

समकालीन कविता में समाजवादी विचारधारा को प्रवाहित करने वाले कवियों में **श्री रघुवीर सहाय जी** एक सषक्त हस्ताक्षर हैं। श्री सहाय जी राजनैतिक संदर्भो को काव्य में निरूपित करने में सिद्धहस्त हैं। उन्होंने षासन की स्वेच्छाचारी षोषणवृति का पर्दाफाश करने का सार्थक प्रयास किया है। 'आपकी हॅसी' कविता में निरंकुश शासक वर्ग पर व्यंग्याघात करते हुए लिखते हैं–

निर्धन जनता का शोषण है, कह कर आप हॅसे/लोकतंत्र का अंतिम क्षण है, कहकर आप हॅसे/चारों ओर बड़ी लाचारी है,कहकर आप हॅसे/कितने सुरक्षित होंगे,मैं सोचने लगा/सहसा मुझे अकेला पाकर,फिर से आप हॅसे।।''10

'सूर्य का स्वागत',आवाजों के घेरे में,एक कंठ विषपायी और साये में धूप' जैसी प्रखर रचनाओं से समकालीन काव्यधारा में अपनी पहचान बनाने वाले समर्थ कवि **श्री दुष्यंत कुमार त्यागी** जी ने स्वाधीनता पर्यन्त देष में निर्मित जर्जर एवं अलोकतांत्रिक परिस्थितियों के जिम्मेदार सत्ताधारियों की कलई जनता के सामने खोलकर रख दिया है –**''कहॉ तो तय था चिरागॉ हरेक घर के लिए,कहॉ चिराग मयस्सर नहीं षहर के लिए।/न हो कमीज तो पॉवों से पेट ढॅक लेंगे,ये लोग कितने मुनासिब हैं, इस सफर के लिए।''11**

स्वतंत्र भारत में विपन्नता और अभाव जन्य विषम परिस्थितियों को अनुभव के स्तर पर देखने और अपनी काव्य की पैनी धार से मूलोच्छेदन करने वाले कवियों में **श्री सुदामा पांडे 'धूमिल'** का नाम अग्रणी है। धूमिल जी की कविता प्रहार और पर्दाफाश की कविता है। उनके काव्य में निहित युग सचेतक भावना को लक्षित करके कहा गया यह कथन पूर्णतः सत्य है कि '' धूमिल की कविता क्षत–विक्षत हिन्दुस्तान की तस्वीर है, वह लोकतंत्र की

विफलता और राजनीतिक ,सामाजिक तथा नैतिक स्तर पर आम आदमी के साथ किये गये विष्वासघात का दस्तावेज है।''इस कथन को प्रमाणित करने वाली उनकी कविता **'रोटी और संसद'** दृष्टव्य है –

'' एक आदमी रोटी बेलता है,/एक आदमी रोटी खाता है/एक तीसरा आदमी भी है/ जो न रोटी बेलता है,न खाता है/ मैं पूछता हूँ/ यह तीसरा आदमी कौन है/ मेरे देष की संसद मौन है।'' 12

अंग्रेजी हुकुमत से स्वाधीनता तो मिल गई किंतु आत्मिक स्वाधीनता मिल न सकी। स्वार्थ के बीज से उत्पन्न सांप्रदायिकता का विष बेल ने समाज को जकड़ लिया। उनकी कविता 'बीस साल बाद इसका प्रमाण प्रस्तुत करती हुई आजादी पर प्रष्नचिन्ह लगाती है – **'' क्या आजादी सिर्फ तीन थके रंगों का नाम है/ जिन्हें एक पहिया ढोता है/या इसका कोई खास मतलब होता है?''** 13

हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। हमारा संविधान जन–गण को सर्वोपरि मानते हुए उसे सभी प्रकार के समता का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है। किन्तु यह संवैधानिक तथ्य मात्र बनकर रह गया है। वे 'अकाल दर्शन' नामक कविता में आर्थिक विषमता पर कठोर प्रश्नाघात करते हुए लिखते हैं **–''वह कौन सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है/कि जिस उम्र में/मेरी मां का चेहरा/झुर्रियों की झोली बन गया है/ उसी उम्र की मेरे की मेरे पड़ोस की महिला के चेहरे पर/ मेरी प्रेमिका के चेहरे सा लोच है।'' 14**

सामाजिक–राजनैतिक विडम्बनाओं के प्रति व्यंग्यशर संघात करने वाले समकालीन कवियों में **श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी** प्रमुख स्थान रखते हैं। श्री सक्सेना जी स्वयं में एक अभिव्यक्ति हैं। वे कभी समझौतावादी नहीं रहे। उन्होंने अपने काव्य–फलक पर सामाजिक–राजनैतिक खोखलेपन के व्यंग्य चित्र खीचने का प्रयास किया है। उनकी ये पंक्तियॉ दृष्टव्य है – **''लोकतंत्र को जूते की तरह/ लाठी में लटकाए/भागे जा रहे हैं सभी/सीना फुलाए।।''**

इसी कड़ी में **श्री धर्मवीर भारती जी** ने भी समकालीन राजनीतिक विसंगतियों गहरा कुठाराघात किया है। आज की राजनीति में सर्वत्र छल–प्रपंच, स्वार्थ और अवसरवादिता का बोलबाला है। वह राजनीति कम कूटनीति अधिक हो गई है। जन साधारण पक्षपातपूर्ण राजनीति के दुष्चक्र में पीसता चला जा रहा है। न्याय कहीं खो गया है। भारती जी को पूर्ण विश्वास है कि ऐसे अवसरवादियों को जनक्रांति की आग भस्मीभूत कर पाश्विक मृत्यु प्रदान करेगी। ' अंधायुग' गीतिनाट्य में श्रीकृष्ण को गांधारी द्वारा दिया गया अभिशाप यही चित्रित करता है–

'' तुमने किया है प्रभुता का दुरूपयोग/यदि सेवा में बल है/संचित तप में धर्म है/ तो सुनो कृष्ण/ सारा तुम्हारा वंश/ पागल कुत्तों की तरह/एक दूसरे को परस्पर फाड़ खाएगा/तुम खुद उनका विनाश करके कई वर्षों बाद/किसी जंगल में/साधारण व्याध के हाथों मारे जाओगे/ प्रभु हो/ पर मारे जाओगे पशुओं की तरह।।'' 15

वर्तमान राजनीति आर्थिक जगत में एकाधिकार रखने वाले पूंजीपतियों का अनुचरी हो गई है। दीर्घ अवधि के संघर्षोंपरांत मिली स्वाधीनता की पृष्ठभूमि में समतामूलक समाज की परिकल्पना आकाष–कुसुम बनकर रह गया। मणि–कंचन की चाह रखने वाले तथाकथित राजनेतागण जनतंत्र की परवाह न कर सिर्फ वायदों की खेती करते हैं। कवि **श्री नाथूराम शर्मा जी** की कविता में सामान्य जन की पीड़ा बोध उभर आया है – **'' अरबपति जनप्रतिनिधि,मणि कंचन की चाह/कौन करे जनतंत्र में जन–गण की परवाह/वायदों की खेती में ये कैसा आगाज/ गगन बीच में उड़ रहे, पंख कटे परबाज।।''16**

उपरोक्त प्रस्तुत काव्य पंक्तियॉ आधुनिक काव्य में लोकतांत्रिक मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति के किंचित आंशिक उदाहरण मात्र हैं। लोकतांत्रिक मूल्य भारतीय जीवन षैली का पर्याय का है। अतः आधुनिक काव्य के समस्त रचनाकारों ने सामाजिक–राजनैतिक क्षेत्र में फैली विसंगतियों के प्रति मुखर स्वर में तीव्र विक्षोभ प्रकट किया है। जहॉ भी उन्हें असंगति दिखाई दी, वे प्रहार करने से नहीं चूके। उनका दृष्टिकोण मार्क्सवाद का अनुगामी रहा है

जिसके कारण साधारण से साधारण जन को महत्त्व प्रदान करने की कोषिष की गई है। इनकी कविताएँ स्वतंत्रता पश्चात् विभिन्न समस्याओं से मुक्ति हेतु छटपटाते साधारण जन की व्यथा कथा है। इनकी कविताओं का उत्स सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से शोषित जनता की छटपटाहट है। इनकी कविताओं में जहॉ साधारण के प्रति असीम संवेदना है वहीं शोषक वर्ग के विरूद्ध आक्रोशमय चेतावनी भी। वास्तव में ये कवि जनकवि ,पथ–प्रदर्षक और युग–सचेतक हैं। लोकतंत्र की प्रतिस्थापना और अक्षुण्ण बनाये रखना इनकी कविताओं का मूल उद्देश्य है। संपूर्ण मानव समाज के प्रति इनकी मंगलकामना प्रसाद जी की इन पंक्तियों में समाहित है–

''चेतना का सुंदर इतिहास, अखिल मानव भावों का सत्य,

विश्व के हृदय पटल पर,दिव्य अक्षरों से अंकित हो नित्य।

विधाता की कल्याणी सृष्टि, सफल हो इस भूतल पर पूर्ण,

पटें सागर,बिखरें ग्रह–पूंज और ज्वालामुखियॉ हो चूर्ण।।'' 17

संदर्भ सूची–

1. .मुक्तिबोध रचनावलीःभाग पॉचःपृष्ठ44 : राजकमल प्रकाषन 2011
2. मानस रहस्य : गीता प्रेस गोरखपुर पृष्ठ 58 सं. 2069 तैंतीसवॉ पुनर्मुद्रण
3. साकेत – मैथिलीषरण गुप्त
4. रश्मिरथी – रामधारी सिंह दिनकर
5. कामायनी श्रद्धा सर्ग : जयषंकर प्रसादः आधुनिक हिन्दी काव्य : उपयोगी प्रकाशन पृ. 167
6. अर्वाचीन हिन्दी काव्य –छ.ग. ग्रंथ अकादमी –पं सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
7. मुक्तिबोध रचनावलीःभाग एकः राजकमल प्रकाषन 2011
8. गीत फरोश – पं. भवानी प्रसाद मिश्र
9. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ – नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया
10. समकालीन हिन्दी काव्य –म.प्र हिन्दी ग्रंथ अकादमीः 'आपकी हॅसी' –रघुवीर सहाय
11. साये में धूप – दुष्यंत कुमार – राधाकृष्ण प्रकाषन पृ. 13
12. संसद से सड़क तक : रोटी और संसदः धूमिल
13. वही
14. वही
15. अंधायुग : धर्मवीर भारती
16. साहित्य अमृत सितंबर 2009 पृष्ठ 60
17. कामायनी : श्रद्धा सर्ग : जयशंकर प्रसाद